



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 596]
No. 596]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जुलाई 4, 2003/आषाढ़ 13, 1925
NEW DELHI, FRIDAY, JULY 4, 2003/ASADHA 13, 1925

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड

अधिसूचना

मुम्बई, 4 जुलाई, 2003

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (डिबेंचर न्यासी) (संशोधन) विनियम, 2003

का.आ. 763(अ).— बोर्ड, भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 का 15) की धारा 30 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए एतद्वारा भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (डिबेंचर न्यासी) विनियम, 1993 का संशोधन करने के लिए निम्नलिखित विनियम बनाता है, अर्थात् :-

- 1.(i) इन विनियमों को भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (डिबेंचर न्यासी) (संशोधन) विनियम, 2003 कहा जा सकेगा ।
- (ii) वे राजपत्र में उनके प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे ।
2. भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (डिबेंचर न्यासी) विनियम, 1993 (इसमें इसके पश्चात् "उक्त विनियमों" के रूप में निर्दिष्ट) में :-

- (i) उक्त विनियमों के विनियम 2 में, खंड (ड) के पश्चात् निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जायेगा, अर्थात् -

"(ड) "शुद्ध मालियत" से सबसे पश्चात् के लेखापरीक्षित तुलनपत्र के अनुसार संचित हानियों और बट्टे खाते न डाले गये आस्थगित व्यय (जिनमें बट्टे खाते न डाले गये विविध व्यय सम्मिलित हैं) के कुल मूल्य से घटाये गये समादत्त इक्विटी पूंजी और खुली आरक्षितियों (पुनर्मूल्यांकन में से सृजित आरक्षितियों को छोड़कर) के मूल्य का योग अभिप्रेत है।"

- (ii) उक्त विनियमों के विनियम 2 के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जायेगा, अर्थात् -

"स्पष्टीकरण जारी करने की बोर्ड की शक्ति -

2क. आवेदन या इन विनियमों के निर्वचन की बाबत किन्हीं कठिनाइयों को दूर करने के लिए, बोर्ड परिपत्रों के रूप में स्पष्टीकरण या मार्गदर्शक सिद्धांत जारी कर सकेगा।"

- (iii) उक्त विनियमों के विनियम 6 में,

(क) खंड (घ) के लिए निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जायेगा, अर्थात् -

"(घ) क्या आवेदक के पास उसके नियोजन में कम से कम एक व्यक्ति ऐसा है जो सरकार द्वारा मान्यताप्राप्त संस्था से शिक्षा में वृत्तिक अर्हता रखता है।"

(ख) खंड (च) के पश्चात् निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जायेगा, अर्थात् -

"(छ) क्या आवेदक विनियम 7क में निर्दिष्ट पूंजी पर्याप्तता अपेक्षाएँ पूरी करता है।"

- (iv) उक्त विनियमों के विनियम 7 के पश्चात्, निम्नलिखित विनियम अंतःस्थापित किया जायेगा, अर्थात् -

"पूंजी पर्याप्तता अपेक्षा

7क. विनियम 6 के खंड (छ) में निर्दिष्ट पूंजी पर्याप्तता अपेक्षा एक करोड़ रुपये की शुद्ध मालियत से कम नहीं होगी।

परंतु यह कि भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (डिबेंचर न्यासी) (संशोधन) विनियम, 2003 के प्रारंभ की तारीख को रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र धारण करने वाला डिबेंचर न्यासी ऐसे प्रारंभ की तारीख से दो वर्षों के भीतर शुद्ध मालियत अपेक्षाएँ पूरी करेगा ।"

- (V) उक्त विनियमों के विनियम 13क के लिए, निम्नलिखित विनियम प्रतिस्थापित किया जायेगा, अर्थात् -

"13क. कोई डिबेंचर न्यासी डिबेंचरों के किसी निर्गम के लिए ऐसी हैसियत से कार्य नहीं करेगा यदि -

(क) यह निगमित निकाय का सहयुक्त है या

(ख) इसने निगमित निकाय को धन उधार दिया है और उधार अभी तक पूर्णतः प्रतिसदत्त नहीं हुआ है या यह उधार देने का प्रस्ताव कर रहा है ।

परंतु यह कि यह अपेक्षा कंपनी (संशोधन) अधिनियम, 2000 के प्रारंभ के पूर्व निर्गमित डिबेंचरों की बाबत लागू नहीं होगी, जहाँ भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (डिबेंचर न्यासी) (संशोधन) विनियम, 2003 के प्रारंभ के पूर्व -

i) प्रतिभूति के प्रति भारित आस्तियों की बाबत वसूली कार्यवाहियाँ आरंभ कर दी गयी हों, या

ii) निगमित निकाय रुग्ण औद्योगिक कंपनी (विशेष उपबंध) अधिनियम, 1985 के अधीन औद्योगिक और वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड को निर्देशित किया गया हो ।"

- (vi) उक्त विनियमों के विनियम 15 में,

(क) उप-विनियम (1) में,

i) खंड (ख) का लोप हो जायेगा ।

ii) खंड (छ) में, शब्द "सुनिश्चित" के लिए शब्द "अभिनिश्चित करे और स्वयं का समाधान" प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

iii) खंड (ज) के लिए निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जायेगा, अर्थात् :-

"(ज) सतत् आधार पर सुनिश्चित करे कि डिबेंचरों के प्रति भारित संपत्ति सभी समयों पर डिबेंचरों की बाबत संदेय ब्याज और मूल रकम को उन्मोचित करने के लिए उपलब्ध और पर्याप्त है और कि ऐसी संपत्ति किन्हीं अन्य विल्लंगमों से रहित है उनके सिवाय और अलावा जो डिबेंचर न्यासी द्वारा विनिर्दिष्ट रूप से मंजूर हैं ।"

(ख) उप-विनियम (2) के पश्चात् निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जायेगा, अर्थात् -

"(3) कोई डिबेंचर न्यासी किसी निगमित निकाय के डिबेंचर निर्गम की बाबत डिबेंचर न्यासी के तौर पर अपने कर्तव्यभारों का त्याग नहीं करेगा, जब तक कि एक अन्य डिबेंचर न्यासी को निगमित निकाय द्वारा इसके स्थान में नियुक्त नहीं कर लिया जाता है ।

(4) डिबेंचर न्यासी सतत् आधार पर इन विनियमों में यथा विनिर्दिष्ट शुद्ध मालियत अपेक्षाओं को बनाये रखेगा और शुद्ध मालियत में किसी कमी की बाबत बोर्ड को तुरंत सूचित करेगा और ऐसे मामले में यह तब तक नये कर्तव्यभार अपने ऊपर लेने का हकदार नहीं होगा जब तक यह शुद्ध मालियत को बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट समय के भीतर विनिर्दिष्ट अपेक्षा के स्तर तक प्रत्यावर्तित नहीं कर लेता ।

(5) डिबेंचर न्यासी निगमित निकाय और न्यास संपत्ति की लेखा बहियों, अभिलेखों, रजिस्ट्रों का निरीक्षण वहाँ तक कर सकेगा जहाँ तक यह इसकी बाध्यताओं के निर्वहन के लिए आवश्यक हो ।"

(vii) उक्त विनियमों के विनियम 17क में, उप-विनियम (2) के पश्चात् निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जायेगा, अर्थात् -

"(3) अनुपालन अधिकारी बोर्ड को निगमित निकाय द्वारा, डिबेंचर निर्गमों और डिबेंचर धारकों की बाबत सूचीबद्धता करारनामे में विनिर्दिष्ट अपेक्षाओं की, किसी अननुपालना की रिपोर्ट देगा ।"

(viii) उक्त विनियमों की अनुसूची IV के लिए निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जायेगा, अर्थात् -

"अनुसूची IV"

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (डिबेंचर न्यासी)
विनियम, 1993

[विनियम 14]

न्यास विलेख की विषय-वस्तु

प्रत्येक डिबेंचर न्यासी सुनिश्चित करेगा कि निगमित निकाय और डिबेंचर न्यासी के बीच निष्पादित न्यास विलेख अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित विषयों का उपबन्ध करेगा अर्थात् :-

1. उद्देशिका

इस खंड में अन्य बातों के साथ डिबेंचर धारकों के अधिकारों और उस रीति का कथन होगा जिसमें ये अधिकार न्यासी में निहित हैं ।

2. लिखतों का वर्णन

इस खंड में अन्य बातों के साथ डिबेंचर निर्गम के माध्यम से वित्त जुटाने के प्रयोजन, रकम, अवधि, ब्याज/कूपन दर, भुगतान की सामयिकता, मोचन के लिए कालावधि, उपलब्ध विकल्पों, डिबेंचर धारकों के प्रति निर्गम के निबंधनों के अनुसार डिबेंचरों के संपरिवर्तन/मोचन के निबंधनों, ऋण इक्विटी अनुपात और ऋण सेवा कवरेज अनुपात, यदि लागू हो, के विषय में डिबेंचरों के वर्णन का कथन होगा ;

3. भारित प्रतिभूतियों के ब्यौरे (विद्यमान या भावी)

इस खंड में अन्य बातों के साथ निम्नलिखित संबंधी ब्यौरों का कथन होगा :

- i. भार का स्वरूप, हक की पड़ताल ।
- ii. आस्तियों के भार का क्रम अर्थात् पहला, दूसरा, पैरी पसु, अवशिष्ट आदि ।
- iii. भावी आस्तियों का भार ।

- iv. समय सीमा जिसके भीतर डिबेंचरों के निर्गम के लिए भावी प्रतिभूति भाप्रविबो (प्रकटीकरण और निवेशक संरक्षण) मार्गदर्शक सिद्धांत, 2000 में यथा विनिर्दिष्ट सृजित होगी ।
- v. प्रतिभूतियों की प्रवर्तनीयता, दशाएँ जिनके अंतर्गत प्रतिभूति प्रवर्तनीय हो जाती है ।
- vi. न्यासी के पूर्विक अनुमोदन के बिना न्यास संपत्ति का अतिरिक्त भार या विल्लंगम सृजित न करने की कंपनी की बाध्यता ।
- vii. न्यूनतम प्रतिभूति कवर अपेक्षित ।
- viii. पश्चात्पूर्ति मूल्यांकन के लिए उपबंध ।
- ix. परिस्थितियाँ जब प्रतिभूति प्रवर्तनीय हो जायेगी ।
- x. डिबेंचर धारकों के लिए प्रतिभूति के तौर पर भारित आस्तियों के परिरक्षण की रीति और ढंग ।
- xi. यह विनिर्दिष्ट करने वाली परिस्थितियाँ जब न्यासियों के अनुमोदन से प्रतिभूति का व्ययन किया या को पट्टे पर दिया जा सकेगा ।
- xii. भारित आस्तियों, लेखा बहियों का, डिबेंचर न्यासी अथवा इसके द्वारा प्राधिकृत किसी व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा निरीक्षण अनुज्ञात करने के लिए प्रक्रिया ।

4. व्यतिक्रमों की दशाएँ

इस खंड में व्यतिक्रम की दशा को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जायेगा जो यदि घटित हो तो डिबेंचर न्यासी द्वारा कार्रवाइयों को आमंत्रित करेगी । इस खंड में उन कदमों को भी अंतर्विष्ट किया जायेगा जो डिबेंचर न्यासी द्वारा व्यतिक्रमों की दशा में उठाये जायेंगे ।

5. डिबेंचर न्यासियों के अधिकार

इस खंड में अन्य बातों के साथ उपबंध होगा कि :

- i. डिबेंचर न्यासी कंपनी के रजिस्ट्रों का निरीक्षण करने और उनकी प्रतियाँ तथा उद्धरण लेने का हकदार है ;
- ii. डिबेंचर न्यासी के पास नामनिर्देशिती निदेशक को नियुक्त करने का अधिकार है ।

6. निगमित निकायों की बाध्यताएँ

इस खंड में अन्य बातों के साथ कंपनी के कर्तव्यों की बाबत निम्नलिखित का कथन होगा :

1. डिबेंचर धारकों का रजिस्टर बनाये रखना जिसमें उनके पतों और पश्चातवर्ती अंतरणों और स्वामित्व के परिवर्तनों का रिकार्ड हो
2. समुचित लेखा बहियों को डिबेंचर न्यासी द्वारा निरीक्षण के लिए खुला रखना
3. डिबेंचर न्यासी को जानकारी प्रस्तुत करना चाहे जो भी अपेक्षित हो जिसमें रिपोर्टें, तुलन पत्रों, लाभ और हानि लेखा की प्रतियाँ आदि सम्मिलित हैं
4. भारित संपत्ति / प्रतिभूति को पर्याप्त रूप से बीमा किया हुआ और समुचित परिस्थिति में रखना
5. डिबेंचर न्यासी को भारित आस्तियों में प्रवेश करने और इनकी अवस्था तथा परिस्थिति का निरीक्षण करने की अनुज्ञा देना
6. भारित संपत्ति / प्रतिभूति की बाबत समस्त करें, उपकरणों, बीमा प्रीमियम, को समय पर अदा करना
7. लाभांश की घोषणा या वितरण करने से पूर्व डिबेंचर न्यासी को सूचित करना
8. तत्काल डिबेंचर निर्गम की बाबत किसी विनियामक प्राधिकरण द्वारा जारी समस्त मार्गदर्शक सिद्धांतों / निदेशों की अनुपालना करना
9. भाप्रविबो (प्रकटीकरण और निवेशक संरक्षण) मार्गदर्शक सिद्धांत, 2000 और कंपनी अधिनियम के उपबंधों के अनुसार डिबेंचर मोचन आरक्षित सृजित करना और न्यासी को लेखापरीक्षक प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना
10. डिबेंचरों को निर्गम के निबंधनों के अनुसार इक्विटी में संपरिवर्तित करना, यदि लागू हो
11. कंपनी द्वारा कारबार के स्वरूप और संचालन में किये गये किसी परिवर्तन के बारे में डिबेंचर न्यासी को ऐसे परिवर्तन के पूर्व सूचित करना
12. भारित आस्तियों को प्रभावित करने वाले या कर सकने वाले न्यायालय / अधिकरण के समस्त आदेशों, निदेशों, सूचनाओं, की सूचना डिबेंचर न्यासी को देते रहना
13. डिबेंचर न्यासी को इसके निदेशक-बोर्ड की संरचना में हुए किसी ऐसे प्रमुख परिवर्तन की सूचना देना, जिससे भाप्रविबो (शेयरों का पर्याप्त अर्जन और अधिग्रहण) विनियम, 1997 में यथा परिभाषित नियंत्रण में परिवर्तन हो सकता हो
14. कोई ऐसी जानकारी प्रस्तुत करना, डिबेंचर न्यासी द्वारा यथा अपेक्षित
15. डिबेंचर न्यासियों की फीस या कमीशन
16. निगमित निकाय द्वारा कारबार के स्वरूप और संचालन में किये गये किसी परिवर्तन के बारे में डिबेंचर न्यासी को ऐसे परिवर्तन के पूर्व सूचित करने की बाध्यता
17. डिबेंचर न्यासियों को तिमाही रिपोर्ट अग्रेषित करने की निगमित निकाय की बाध्यता जिसमें निम्नलिखित विशिष्टियाँ अंतर्विष्ट हों :

- (i) डिबेंचर धारकों के नामों और पतों की अद्यतन सूची ;
- (ii) देय किंतु असंदत ब्याज के ब्यौरे और उसके कारण ;

- (iii) डिबेंचर धारकों से प्राप्त और निगमित निकाय द्वारा दूर की गई शिकायतों की संख्या और स्वरूप ;
- (iv) कथन कि निगमित निकाय की आस्तियाँ जो प्रतिभूति के रूप में उपलब्ध हैं डिबेंचर धारकों के दावों जब कभी वे शोध्य हों को उन्मोचित करने के लिए पर्याप्त हैं ।

7. विविध

- क. न्यासी की नियुक्ति और को हटाने के लिए प्रक्रिया जिसमें नये न्यासियों की नियुक्ति सम्मिलित है ।
- ख. उपबंध कि डिबेंचर न्यासी अपने कर्तव्यभार से त्याग तब तक नहीं करेगा जब तक कि एक अन्य डिबेंचर न्यासी को नियुक्त न कर लिया गया हो ।
- ग. डिबेंचर धारकों द्वारा डिबेंचर न्यासी को हटाने की प्रक्रिया निगमित निकाय के कुल डिबेंचर धारकों के कम से कम 75% द्वारा पारित संकल्प पर हटाने का उपबंध करते हुए ।
- घ. डिबेंचर धारकों की शिकायतों को दूर करने के लिए उपबंध ।

नोट : डिबेंचर न्यासी अतिरिक्त खंडों को सम्मिलित कर सकेगा, परंतु यह कि अतिरिक्त खंड उपर्युक्त खंडों के उपबंधों का तनुकरण या उल्लंघन न करते हों । "

[फा. सं. भाप्रविबो/विधि/11835/2003]

ज्ञानेन्द्र नाथ बाजपेयी, अध्यक्ष

पाद टिप्पण :

1. भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (डिबेंचर न्यासी) विनियम, 1993, सं. सेबी/एलई/12/93, 29 दिसम्बर, 1993 को भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुए थे ।
2. यह तत्पश्चात् -
 - (क) 28 नवंबर, 1995 को भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (फीस का संदाय) (संशोधन) विनियम, 1995, का.आ. सं. 939 (अ), द्वारा
 - (ख) 5 जनवरी, 1998 को भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (डिबेंचर न्यासी) (संशोधन) विनियम, 1998, का.आ. सं. 16 (अ), द्वारा
 - (ग) 30 सितम्बर, 1999 को भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (डिबेंचर न्यासी) (संशोधन) विनियम, 1999, का.आ. सं. 795 (अ), द्वारा
 - (घ) 17 फरवरी, 2000 को भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (डिबेंचर न्यासी) (संशोधन) विनियम, 2000, का.आ. सं. 135 (अ), द्वारा
 - (ङ) 8 अगस्त, 2000 को भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (डिबेंचर न्यासी) (दूसरा संशोधन) विनियम, 2000, का.आ. सं. 743 (अ), द्वारा
 - (च) 28 मई, 2000 को भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (प्रतिभूति अपीलीय न्यायाधिकरण को अपील) (संशोधन) विनियम, 2000, का.आ. सं. 278 (अ), द्वारा
 - (छ) 29 मई, 2001 को भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (मध्यवर्तियों द्वारा विनिधान सलाह) (संशोधन) विनियम, 2001, का.आ. सं. 476 (अ), द्वारा
 - (ज) 27 सितंबर 2002 को भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (जांच अधिकारी द्वारा जांच करने और शास्ति अधिरोपित करने के लिए प्रक्रिया) विनियम, 2002, का. आ. सं. 1045(अ), द्वारा

संशोधित हुआ था ।

185/62/2003-2

SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA**NOTIFICATION**

Mumbai, the 4th July, 2003

Securities and Exchange Board of India (Debenture Trustees) (Amendment) Regulations, 2003

S.O. 763(E).— In exercise of the powers conferred by section 30 of the Securities and Exchange Board of India Act, 1992 (15 of 1992), the Board hereby makes the following regulations to amend the Securities and Exchange Board of India (Debenture Trustees) Regulations, 1993, namely:-

1. (i) These regulations may be called the Securities and Exchange Board of India (Debenture Trustees) (Amendment) Regulations, 2003.

(ii) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Securities and Exchange Board of India (Debenture Trustees) Regulations, 1993(hereinafter referred to as 'the said Regulations'): -

(i) in regulation 2 of the said Regulations, after clause (e) the following shall be inserted, namely -

“(ee) “networth” means aggregate of value of the paid up equity capital and free reserves (excluding reserves created out of revaluation) reduced by the aggregate value of accumulated losses and deferred expenditure not written off (including miscellaneous expenses not written off) as per the latest audited balance sheet.”

- (ii) after regulation 2 of the said Regulations, the following shall be inserted, namely –

"Power of the Board to issue clarifications"

2A. In order to remove any difficulties in respect of the application or interpretation of these regulations, the Board may issue clarifications or guidelines in the form of circulars."

- (iii) in regulation 6 of the said Regulations,

(a) for clause (d) the following shall be substituted, namely –

"(d) has in his employment at least one person who possesses the professional qualification in law from an institution recognised by the Government."

(b) after clause (f) the following shall be inserted, namely –

"(g) fulfills the capital adequacy requirements specified in regulation 7A"

- (iv) after regulation 7 of the said Regulations, the following regulation shall be inserted, namely –

"Capital Adequacy Requirement."

7A. The capital adequacy requirement referred to in clause (g) of regulation 6 shall not be less than the networth of one crore rupees.

Provided that a debenture trustee holding certificate of registration as on the date of commencement of the Securities and Exchange Board of India (Debenture Trustees) (Amendment)

Regulations, 2003 shall fulfill the networth requirements within two years from the date of such commencement.”

- (v) for regulation 13A of the said Regulations, the following regulation shall be substituted, namely -

“13A. No debenture trustee shall act as such for any issue of debentures in case-

- (a) it is an associate of the body corporate or
- (b) it has lent and the loan is not yet fully repaid or is proposing to lend money to the body corporate.

Provided that this requirement shall not be applicable in respect of debentures issued prior to the commencement of the Companies (Amendment) Act, 2000, where-

- (i) recovery proceedings in respect of the assets charged against security has been initiated, or
 - (ii) the body corporate has been referred to Board for Industrial and Financial Reconstruction under the Sick Industrial Companies (Special Provisions) Act, 1985, ,
- prior to commencement of the Securities and Exchange Board of India (Debenture Trustees) (Amendment) Regulations, 2003.”

- (vi) in Regulation 15 of the said Regulations,

- (a) in sub-regulation (1),

(i) clause (b) shall be omitted.

(ii) in clause (g), for the word “ensure” the words “ascertain and satisfy itself” shall be substituted.

- (iii) for clause (h) the following shall be substituted, namely :-

“(h) ensure on a continuous basis that the property charged to the debentures is available and adequate at all times to discharge the

interest and principal amount payable in respect of the debentures and that such property is free from any other encumbrances save and except those which are specifically agreed to by the debenture trustee."

(b) after sub-regulation (2) the following shall be inserted, namely -

"(3) No debenture trustee shall relinquish its assignments as debenture trustee in respect of the debenture issue of any body corporate, unless and until another debenture trustee is appointed in its place by the body corporate.

(4) A debenture trustee shall maintain the networth requirements as specified in these regulations on a continuous basis and shall inform the Board immediately in respect of any shortfall in the networth and in such a case it shall not be entitled to undertake new assignments until it restores the networth to the level of specified requirement within the time specified by the Board.

(5) A debenture trustee may inspect books of accounts, records, registers of the body corporate and the trust property to the extent necessary for discharging its obligations."

(vii) in regulation 17A of the said Regulations, after sub regulation (2) the following shall be inserted, namely -

"(3) The compliance officer shall report any non-compliance, of the requirements specified in the listing agreement with respect to debenture issues and debenture holders, by the body corporate to the Board."

(viii) for the Schedule IV of the said Regulations the following shall be substituted, namely—

“SCHEDULE IV

Securities and Exchange Board of India (Debenture Trustees)
Regulations, 1993

[Regulation 14]

CONTENTS OF TRUST DEED

Every debenture trustee shall ensure that the trust deed executed between a body corporate and debenture trustee shall amongst other things provide for the following matters namely: -

1. Preamble

This section shall inter-alia state the rights of the debenture holders and the manner in which these rights are vested in the trustee.

2. Description of instruments

This section shall inter-alia state the purpose of raising finance through debenture issue, description of debentures as regards amount, tenure, interest/coupon rate, periodicity of payment, period for redemption, options available, terms of conversion/redemption of the debentures in terms of the issue to the debenture holders, debt equity ratio and debt service coverage ratio, if applicable;

3. Details of Charged Securities (Existing or future)

This section shall inter-alia state the details regarding the following :

- i. Nature of charge, examination of title
- ii. Rank of charge of assets viz. First , second, pari passu, residual etc
- iii. Charging of future assets.

- iv. Time limit within which the future security for the issue of debentures shall be created as specified in SEBI (Disclosure and Investor Protection) Guidelines, 2000.
- v. Enforceability of securities, events under which security becomes enforceable
- vi. Obligation of company not to create further charge or encumbrance of the trust property without prior approval of the trustee.
- vii. Minimum security cover required.
- viii. Provision for subsequent valuation.
- ix. Circumstances when the security will become enforceable.
- x. Method and mode of preservation of assets charged as security for debenture holders.
- xi. Circumstances specifying when the security may be disposed off or leased out with the approval of trustees.
- xii. Procedure for allowing inspection of charged assets, book of accounts, by debenture trustee or any person or persons authorised by it;

4. Events of defaults

This section shall clearly define the event of default which if occurs shall invite the actions by debenture trustee. This section shall also contain the steps which shall be taken by debenture trustee in the event of defaults.

5. Rights of debenture trustees

This section shall inter-alia provide that :

- i. Debenture Trustee is entitled to inspect the registers of the company and to take copies and extracts thereof;
- ii. Debenture Trustee has a right to appoint a nominee director.

6. Obligations of body corporates

This section shall inter-alia state the following with respect to company's duties :

- 1. to maintain Register of debenture holders with addresses with record of subsequent transfers and changes of ownership

2. to keep proper books of accounts open for inspection by debenture trustee
3. to furnish whatever required information to debenture trustee including copies of reports, balance sheets , profit and loss accounts etc.
4. to keep charged property/security adequately insured and in proper condition.
5. to permit debenture trustee to enter and inspect the state and condition of charged assets.
6. to pay all taxes, cesses, insurance premia with respect to charged property/security, on time.
7. to inform debenture trustee before declaring or distributing dividend.
8. to comply with all guidelines/directions issued by any Regulatory authority, with respect to the instant debenture issue.
9. to create debenture redemption reserve as per the SEBI (Disclosure and Investor Protection) Guidelines,2000 and the provisions of Companies Act and submit an auditor's certificate to the trustee.
10. to convert the debentures into equity in accordance with the terms of the issue, if applicable.
11. to inform debenture trustee about any change in nature and conduct of business by company before such change.
12. to keep the debenture trustee informed of all orders, directions, notices, of court/tribunal affecting or likely to affect the charged assets.
13. to inform debenture trustee of any major change in composition of its Board of Directors, which may amount to change in control as defined in SEBI (Substantial Acquisition of shares and Takeovers) Regulations 1997.
14. to submit any such information, as required by the debenture trustee.
15. fee or commission of debenture trustees.
16. obligation to inform debenture trustee about any change in nature and conduct of business by the body corporate before such change.
17. obligation of the body corporate to forward a quarterly report to debenture trustees containing the following particulars:
 - (i) updated list of the names and addresses of the debenture holders;
 - (ii) details of interest due but unpaid and reasons thereof;

- (iii) the number and nature of grievances received from debenture holders and resolved by the body corporate;
- (iv) a statement that the assets of the body corporate which are available by way of security are sufficient to discharge the claims of the debenture holders as and when they become due.

7. Miscellaneous

- a. Procedure for appointment and removal of trustee including appointment of new trustees.
- b. Provision that the debenture trustee shall not relinquish from its assignment unless an other debenture trustee has been appointed.
- c. Procedure to remove debenture trustee by debenture holders providing for removal on a resolution passed by atleast 75% of the total debenture holders of a body corporate.
- d. Provisions for redressal of grievances of debenture holders.

NOTE: The debenture trustee may incorporate additional clauses, provided that the additional clauses do not dilute or contravene the provisions of the above clauses."

[F. No. SEBI/LGL/11835/2003]

G.N. BAJPAI, Chairman

Footnote :

1. Securities and Exchange Board of India (Debenture Trustee) Regulations, 1993, were published in the Gazette of India on December 29, 1993, vide No.SEBI/LE/12/93.
2. It was subsequently amended –
 - (a) on November 28, 1995 by the Securities and Exchange Board of India (Payment of Fees) (Amendment) Regulations, 1995 vide S.O. No.939 (E).
 - (b) on January 5, 1998 by the Securities and Exchange Board of India (Debenture Trustees) (Amendment) Regulations, 1998 vide S.O. No.16(E).
 - (c) on September 30, 1999 by the Securities and Exchange Board of India (Debenture Trustees) (Amendment) Regulations, 1999 vide S.O. No.795(E).
 - (d) on February 17, 2000 by the Securities and Exchange Board of India (Debenture Trustees) (Amendment) Regulations, 2000 vide S.O. No.135(E).
 - (e) on August 8, 2000 by the Securities and Exchange Board of India (Debenture Trustees) (Second Amendment) Regulations, 2000 vide S.O. No.743(E).
 - (f) on May 28, 2000 by the Securities and Exchange Board of India (Appeal to Securities Appellate Tribunal) (Amendment) Regulations, 2000 vide S.O. No.278(E).
 - (g) on May 29, 2001 by the Securities and Exchange Board of India (Investment Advice by Intermediaries) (Amendment) Regulations, 2001 vide S.O. No. 476(E).
 - (h) on September 27, 2002 by the Securities and Exchange Board of India (Procedure for Holding Enquiry by Enquiry Officer and Imposing Penalty) Regulations, 2002 vide S.O. No.1045(E).